राजस्थान की जैव विविधता

वीथिका

राजीव गांधी क्षेत्रीय प्राकृतिक विज्ञान संग्रहालय
(पर्यावरण एवं वन मंत्रालय)
ग्राम रामसिंहपुरा, पोस्ट शेरपुर, रणथम्भोर रोड,
सवाई माधोपुर – 322001, राजस्थान
फोन : (07462) 223010, फैक्स :(07462) 223010
ईमेल : rgrmnhswmp@gmail.com

राजस्थान की जैव विविधता

राजस्थान राज्य जीवंत संस्कृति, बड़े-बड़े राजा-रजवाड़ों, सुन्दर महलों और अनन्य पारम्परिक मूल्यों से युक्त भूमि होने के साथ ही यहां पर एक ओर विद्यमान बड़े-बड़े रेत के टीले और दूसरी ओर वन्य जीवों के प्राकृतिक वास हैं जिन्होनें अनेक संकट्टापन पौधों और जीव-जन्तुओं की प्रजातियों को संरक्षित रखा हुआ है।

राजस्थान की पृष्ठभूमि में भारत की पुरातन अरावली पर्वत श्रृंखला विद्यमान है जो राजस्थान के बीचों- बीच उत्तर पूर्व से दक्षिण पश्चिम दिशा में लगभग 800 किलोमीटर की लम्बाई में फैली हुई है, जो राजस्थान को एक ओर हरे भरे पर्णपाती वनों से युक्त पूर्वी क्षेत्र और दूसरी ओर राज्य के मरूभूमि क्षेत्र में रेत के टीलों से युक्त पश्चिमी क्षेत्र में विभाजित करती है।

राजस्थान की जैव विविधता के संबंध में यह वीथिका राज्य के जैवकीय तथ्यों और विशेषताओं पर प्रकाश डालने के अतिरिक्त उन कारकों को भी उजागर करती है जो इसकी सम्पोषणीयता के लिए खतरा बने हुए है ।

प्रस्तावना

इस भाग में जैव विविधता के संदर्भ में पंच महाभूतों की मूल संकल्पना को उजागर किया गया है जिसमें राजस्थान का जैव-भू-वैज्ञानिक परिचय, जैव विविधता, प्रकृति पर मानव की निर्भरता, प्रकृति संरक्षण में बिशनोई परम्परा का योगदान तथा राजस्थान राज्य के वृक्ष, फूल, पशु और पक्षी को प्रदर्शित किया गया है।

हिन्दू पुराणों के मतानुसार मानव शरीर पांच महाभूतों-पृथ्वी, जल अग्नि, वायु और आकाश के रूप में ज्ञात पांच सार्वभौमिक मौलिक तत्वों से मिल कर बना है। प्रत्येक महाभूत बिना इन्द्रियग्राह्य किए और विलक्षण तत्वों के साथ प्रकृति से उद्धरित है। इन सब तत्वों के एक साथ मिलने से जीवन स्पंदित होता है, जैसा कि हम प्रकृति में देखते हैं।

राजस्थान राज्य तीन विशिष्ट क्षेत्रों की वानस्पतिक संपदा का संगम स्थल है, जहां पश्चिम से अफ्रीका/अरब, उत्तर से यूरोप/उत्तर एशिया/हिमालय और पूर्व और उत्तरपूर्व से भारत/मलाया द्धीप से वानस्पतिक विशेषताओं के मिलने के कारण यहां विभिन्न प्रकार के पेड़ पौधों के लिए उपयुक्त भूमि है। राज्य के वानस्पतिक तत्वों को पांच जैव-भौगोलिक क्षेत्रों में विभाजित किया गया है।

राजस्थान का बिशनोई समाज पर्यावरण संरक्षण और वन्य जीव जन्तुओं से प्रेम की अपनी परम्परा आज भी उतनी ही कर्मठता से निभा रहा है जैसा कुछ शताब्दियों पूर्व जब उनके गुरू जम्बेश्वर द्वारा अभिलिखित 29 नियमों से प्रेरणा पाकर 1730 ई० में इस जाति की महिलाएं व बच्चों समेत 363 लोगों ने खेजरली वृक्षों की रक्षा हेतु अपने प्राण न्योछावर कर दिये थे । पर्यावरण एवं वन मंत्रालय ने इस बलिदान को सम्मानित करने हेतु अमृता देवी बिशनोई वन्यजीव संरक्षण पुरस्कार की घोषणा की है ।

जैव विविधता की किस्में

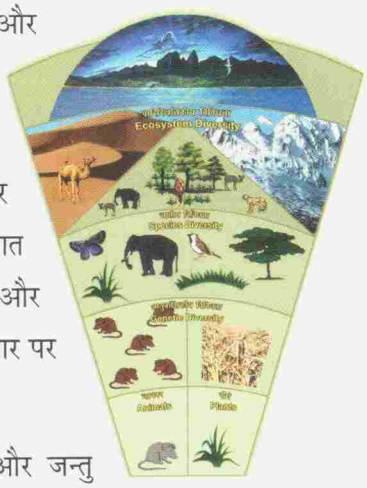

इस भाग में दर्शकों को देश में पाये जाने वाली वानस्पतिक और जन्तु-समूह की प्रजातियों की संख्या के साथ-साथ राज्य में जैव विविधता का ज्ञान मिलता है।

भारत में विश्व के दो वृहद-विविधता स्थल विद्यमान हैं । यहां पर 10 जैव प्रदेश और 27 जैव भौगोलिक क्षेत्र स्थित हैं जो लगभग 11 प्रतिशत वानस्पतिक और 7.43 प्रतिशत जन्तु विविधता को समाए हुए हैं। इन प्रदेशों और क्षेत्रों को देश के विभिन्न भागों में व्याप्त जैव-भू-जलवायु स्थितियों के आधाार पर वर्गीकृत किया गया है।

राजस्थान की तुलना में भारत में पाए जाने वाले वानस्पतिक और जन्तु प्रजातियों की संख्या को एक तुलनात्मक प्रदर्श द्वारा दर्शाया गया है, जिससे यह ज्ञात होता है कि राज्य में जलवायु संबधी स्थितियां व्यापक विविधता को संचित रखने हेतु अतिसंवेदनशील हैं।

मानव जाति और प्रकृति

प्रदर्शनी के इस भाग में यह दर्शाया गया है कि प्रकृति विशेषरुप से जैव विविधता के द्वारा अपनी महत्वपूर्ण सेवाएं प्रदान कर मानव जाति के उत्थान में किस प्रकार सहायक है। राजस्थान की वन संपदा का प्रदर्श यह चित्रित करता है कि प्रतिकूल जलवायु परिस्थितियों के बावजूद भी राजस्थान की वन सम्पदा अधिकांशत: राज्य के पूर्वी और दक्षिणी भागों तक सीमित है और घने जंगल केवल संरक्षित क्षेत्रों (राष्ट्रीय उद्यानों, वन्य जीव अभयारण्यों) और पवित्र वनों में ही पाये जाते हैं। इसके अतिरिक्त 'एक जंगल के दो स्वरूप' नामक डायोरमा जंगलों को काटने के परिणाम व प्रभाव प्रस्तुत करता है ।

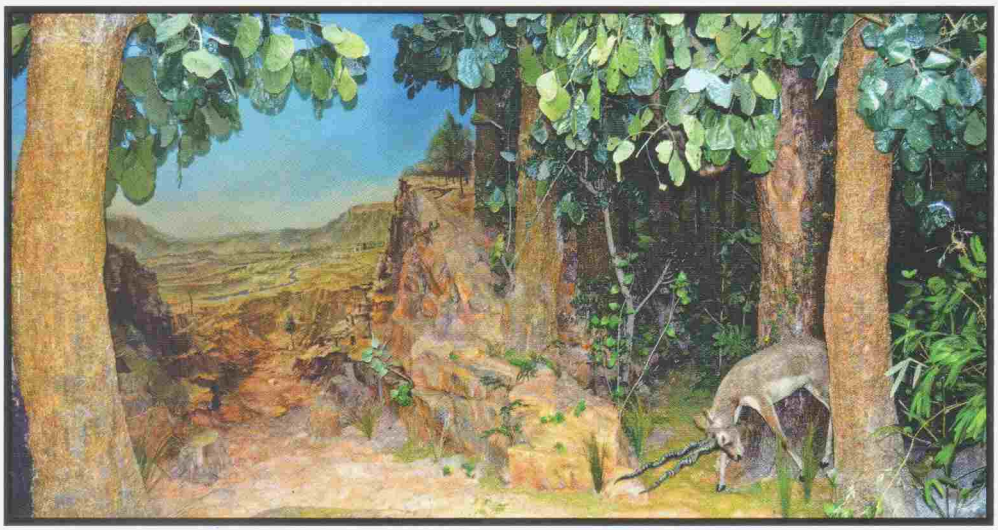

मानव जनसंख्या की अत्यधिक वृद्धि और जलवायु परिवर्तन के कारण प्राकृतिक आवास की कमी के साथ-साथ संसाधानों का अत्यधिक दोहन व नुकसानदायक गैर देशी प्रजातियों को समाविष्ट करने से हमारी जैव विविधता के लिए खतरे उत्पन्न हो गये हैं जिसके परिणाम स्वरुप अनेक वानस्पतिक और जीव-जन्तु प्रजातियां विलुप्त होने के कगार पर पहुँच गई हैं। आई यू सी एन की रैड डाटा सूची में इन संकटापन्न प्रजातियों पर मँडराते खतरे के अनुमान के अनुसार उन्हें विभिन्न संकटग्रस्त श्रेणियों के अंतर्गत वर्गीकृत किया गया है।

संरक्षण

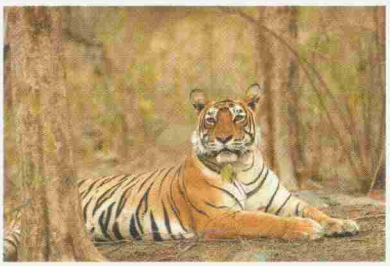

इस भाग में सरकार द्वारा बाघ परियोजना और राष्ट्रीय उद्यानों तथा वन्य जीव अभ्यारणयों की स्थापना जैसी विभिन्न संरक्षण योजनाओं को दर्शाया गया है। इस समय भारत में 15 जैव संरक्षित क्षेत्र उपस्थित हैं।

प्रकृति संरक्षण की भारतीय परम्परा की विश्व में कोई भी समानता नहीं है। ऐतिहासिक रूप से यह परम्परा वैदिक कल से आरंभ हुई थी और 18वीं शताब्दी में बिशनोईयों के बलिदानों से लेकर 20वीं शताब्दी में चिपको आंदोलन तक जारी रही हैं। चिपको और एपिको आंदोलन देश में लोगों की जागरूकता स्तर के उदाहरण है ।

राजस्थान की विभिन्न स्थानीय जनजातियां संस्कृति को जैव विविधता के साथ जोड़ने में अपने महत्वपूर्ण योगदान के लिए प्रसिद्ध हैं। मीणा समुदाय के लोगों, विशेषकर कन्याओं व महिलाओं द्वारा बिन्दुओं और डैशों की सहायता से मांडना चित्रावली (पेन्टिंग्ज) विकसित की जाती हैं जो हर्षोल्लास के अवसर पर एक सुंदर प्राकृतिक वातावरण तैयार करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है।

इसी प्रकार यहां के सपेरा समुदाय द्वारा विकसित कालबेलिया नृत्य को यूनेस्को द्वारा 2010 में मानवता की अमूर्त सांस्कृतिक विरासत की सूची में सम्मिलित किया गया जिससे यह अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर जाना जाता है ।

रणथम्भोर उद्यान 1972 में बाघ परियोजना केन्द्र घोषित होने के उपरान्त से एक अति महत्वपूर्ण बाघ संरक्षण स्थल है यहां पर आज बड़ी संख्या में बाघ इस प्राकृतिक आवास में संरक्षण प्राप्त कर रहे हैं । रणथम्भोर पर त्रिविम प्रदर्श इस क्षेत्र के ऐतिहासिक महत्व को उजागर करता है जिसमें स्थित रणथभोर के किले को हाल ही में विश्व घरोहर स्थल धोषित किया गया है ।

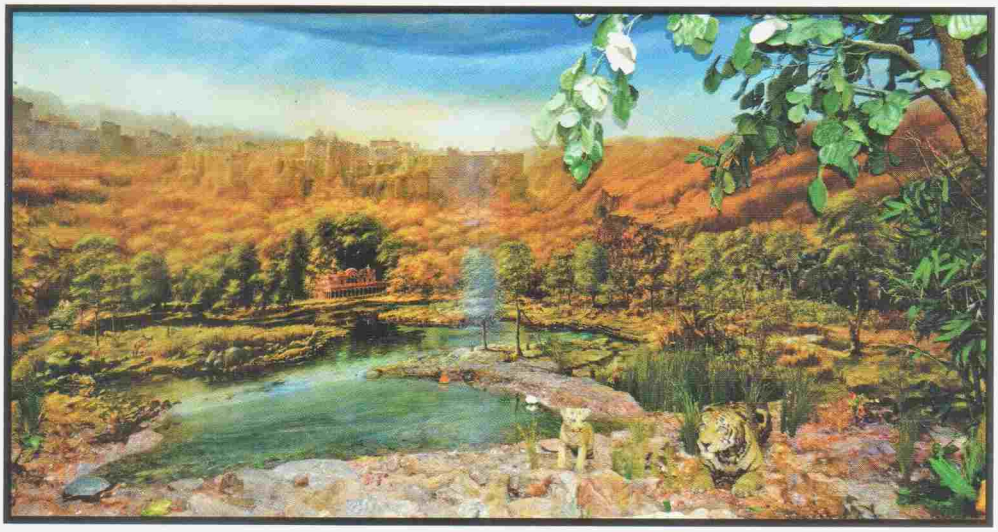

राजस्थान की जैव विविधता

प्रदर्शनी के इस क्षेत्र में राजस्थान में पाये जाने वाले जन्तुओं के अलग-अलग समूहों की जैव विविधता पर प्रदर्शों के साथ - साथ राजस्थान में पायी जाने वाली महत्वपूर्ण वनस्पतियों के प्रदर्शों को चित्रित किया गया है। राजस्थान की शुष्क परिस्थितियां रेंगने वाले जन्तुओं के लिए अत्यधिक सहायक संरक्षण स्थल हैं। राज्य में सांप की 30 जातियों के अतिरिक्त गिरगिट की 26 जातियां और कछुए की 11 जातियां पाई जाती हैं। जलीय स्थलों के निकट उभयचरों में मेढकों की 9 जातियां तथा टोड की 3 जातियां पायी जाती हैं।

राजस्थान में पाए जाने वाली जैव विविधता में पक्षी प्रजातियों की विविधता सबसे अधिक सशक्त है । भारत में पायी जाने वाली 1232 पक्षी प्रजातियों में से केवल राजस्थान में ही लगभग 500 प्रजातियां पायी जाती हैं। इनमें प्रति वर्ष राज्य की आर्द्र भूमि और जल स्रोतों में राजस्थान आने वाले दुर्लभ और प्रवासी पक्षियों के लगभग 50 प्रतिशत पक्षी सम्मिलित हैं।

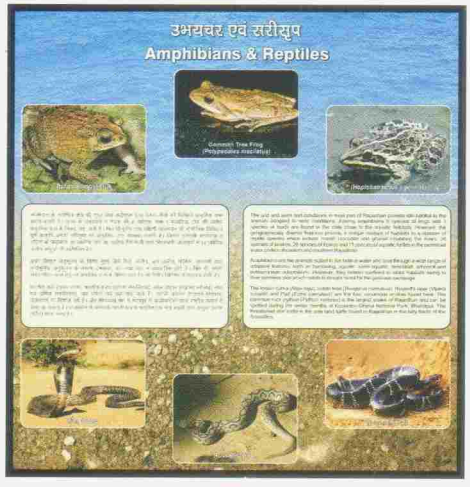

राजस्थान के मत्स्य जंतु समूह की विविधता भी भरपूर है। राज्य में मछली प्रजाति की लगभग 116 जातियां पाई जाती हैं । ये नदियों, जलाशयों व ं कियोलाडियो घाना राष्ट्रीय उद्यान और सम्भार झील जैसे जल सरोवरों में विद्यमान हैं ।

राजस्थान का शुष्क क्षेत्र स्तनधारी जीवों व रेंगने वाले जंतुओं की विशिष्ट प्रजातियों के लिए वास स्थल है, उनमें बहुत से जीव जन्तु रात्रिचर हैं जो बिलों से केवल रात के समय ही बाहर आते हैं। राज्य में लाल लोमड़ी, चिंकारा, मरू-लोमड़ी, भेड़िया, मरू बिल्ली जैसे कुछेक महत्वपूर्ण जंतु पाये जाते हैं।

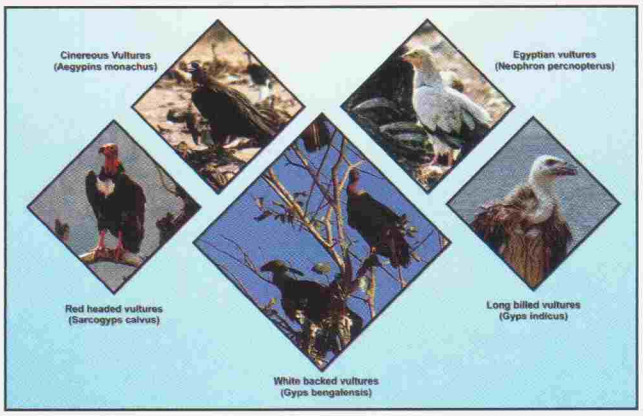

गिद्धों की कम हो रही संख्या सारे विश्व के पारिस्थितिक वैज्ञानिकों के लिए चिंता का विषय बना हुआ है। ये अपमार्जक पक्षी दर्द निवारक डाइक्लोफिनेक के कारण लगभग विलुप्त होते जा रहे हैं। भारत में गिद्धों की 9 प्रजातियां पाई जाती हैं।

जिस प्रकार यॉक तिब्बती व अन्य पर्वतीय क्षेत्रों में रहने वाले समुदायों के लिए महत्वपूर्ण है उसी प्रकार ऊंट राजस्थान के लोगों के लिए महत्वपूर्ण है। यह मरूस्थल का जहाज जिस गति से भूमि पर चलता है उतनी ही गति से यह रेत पर भी चल सकता है जिसके कारण रेगिस्तान के लोग इसे वाहन के रूप में उपयोग करते हैं।

पारम्परिक ज्ञान

अगले खंड में राजस्थानी समुदायों के पारम्परिक ज्ञान पर आधारित कुछ प्रदर्श दर्शाये गये हैं, जैसे सामाजिक महत्व की वनस्पतियां, खेजड़ी वृक्ष - राजस्थान की जीवनरेखा, राजस्थान की मुख्य वनस्पतियां तथा औषधीय वनस्पतियां इत्यादि । पारम्परिक ज्ञान हमारे पूर्वजों द्वारा एकत्रित ज्ञान था जिसे असंख्य प्रयोगों द्वारा अर्जित किया गया तथा जिसे आने वाली पीढ़ियों को केवल मौखिक रूप से उपलब्ध कराया जाता था। आर्थिक दृष्टि से व चिकित्सीय प्रयोजनों के लिए पारम्परिक पौधों का यह ज्ञान मानवता के लिए बहुपयोगी सिद्ध हो सकता है।

खेजड़ी वृक्षों को राजस्थान की जीवनरेखा भी कहा जाता है । इस वृक्ष को न केवल बिशनोई समुदाय में अपितु संपूर्ण राजस्थान राज्य में कल्पवृक्ष की तरह पवित्र माना जाता है। वृक्ष के प्रत्येक भाग का अलग-अलग उपयोग होता है जिसके कारण यह वृक्ष बहुप्रयोजनीय वृक्ष है। पारिस्थितिकीय रूप में भी यह वृक्ष महत्वपूर्ण है, जो अत्यधिक गहराई से पानी और पोषाहार प्राप्त करता है।

पवित्र वनों की परम्परा अनेक राज्यों में भी आज भी प्रचलित है, जिनमें राजस्थान भी एक है । पवित्र वन छोटे-छोटे वन क्षेत्र होते हैं जिन्हें औरान कहा जाता है । यह वन गांवों से जुड़े रहते हैं तथा इन क्षेत्रों की उनके पर्यावरणिक महत्व के कारण पूजा अर्चना भी की जाती है। अनेक जीवों और पौधों को उन्हें ईश्वरत्व के साथ जोड़कर उनकी सुरक्षा निर्धारित की गई है । कुछ जीवों का विभिन्न देवी - देवताओं से संबंध यहां प्रदर्श में चित्रित किया गया है।

राजस्थान के नम भूमि क्षेत्र

नम भूमि विभिन्न प्रकार के पौधों और जन्तु जीवन को संपोषित करती है और उन्हें महत्वपूर्ण पारिस्थितिक सार्थकता प्रदान करती है। राजस्थान में पानी की कमी होने के बावजूद भी राज्य में नदियों, झीलों और तालाबों सहित नम भूमि क्षेत्रों का बहुत बड़ा संजाल है। बहुत से जलाशय प्राकृतिक हैं जबकि अन्य मानव निर्मित हैं। क्योलाड़ियो घाना राष्ट्रीय उद्यान (भरतपुर पक्षी अभयारण्य) एक ऐसा ही कृत्रिम जल स्रोत है जिसे विगत वर्षों में शिकार हेतु प्रयोग किया जाता था परंतु अब यह एक महत्वपूर्ण नम भूमि जल स्रोत है जो शरद ऋतु में अनेक प्रवासी पक्षियों को अपनी ओर आकर्षित करता है। इस महत्वपूर्ण राष्ट्रीय उद्यान को 1985 में विश्व सम्पदा स्थल घोषित किया गया था।

प्रदर्शनी के संबंध में परस्पर प्रश्नोत्तरी

प्रदर्शनी के अंत में प्रदर्शनी पर आधारित विषयों के आधाार पर एक परस्पर प्रश्नोत्तरी की व्यवस्था की गई है जो दर्शकों के लिए मददगार सिद्ध होगी ।

संग्रहालय समय:

रा प्रा वि स के अंतर्गत कार्यरत सभी संग्रहालय आम जनता के लिए सोमवार व राष्ट्रीय अवकाश को छोड़कर प्रत्येक दिन प्रातः १०.०० से सांय ५.०० बजे तक खुले हैं ।

राष्ट्रीय प्राकृतिक विज्ञान संग्रहालय

(पर्यावरण एवं वन मंत्रालय)

तानसेन मार्ग, नई दिल्ली - 110001
फोन: (011) 23314932; फैक्स : (011) 23319173
ईमेल : dirnmnh@gmail.com

क्षेत्रीय प्राकृतिक विज्ञान संग्रहालय :

1. क्षेत्रीय प्राकृतिक विज्ञान संग्रहालय
सिद्धार्थ नगर (पी ओ)
मैसूर - 570011
फोन: (0821) 2447046; फैक्स : (0821)2446453
ईमेल : rmnhmysore@gmail.com

2. क्षेत्रीय प्राकृतिक विज्ञान संग्रहालय
ई 5, एपको कैम्पस, अरेरा कॉलोनी (पी ओ)
भोपाल - 462016
फोन: (0755) 2420429; फैक्स: (0755) 2467551
ईमेल: rmnhbpl@rediffmail.com

3. क्षेत्रीय प्राकृतिक विज्ञान संग्रहालय
आर आर एल (पी ओ), आचार्य विहार
भुवनेश्वर -751013
फोन: (0674) 2567114; फैक्स: (0674) 2567784
ईमेल: rmnhbbsr@yahoo.co.in

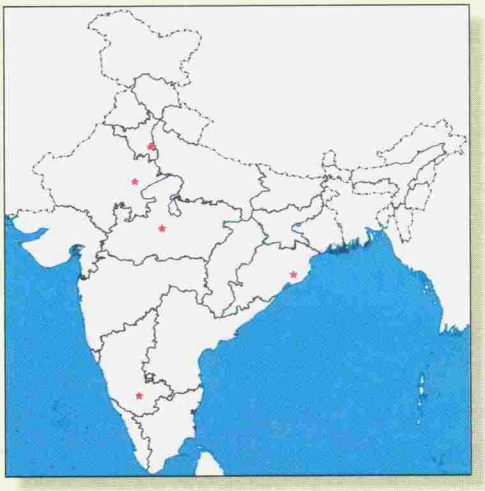

4. राजीव गांधी क्षेत्रीय प्राकृतिक विज्ञान संग्रहालय
ग्राम रामसिंहपुरा, पोस्ट शेरपुर, रणथम्भोर रोड,
सवाई माधोपुर - 322001, राजस्थान
फोन : (07462) 223010, फैक्स : (07462) 223010
ईमेल : rgrmnhswmp@gmail.com

Compiled, Designed and Produced by the Publication Division of the NMNH on the occasion of the inauguration of RG RMNH, Sawai Madhopur, Rajasthan.